## त्रयोदशः पाठः

# वर्णोच्चारण-शिक्षा १

0872CH13

शब्दानां सम्यक् शुद्धं च उच्चारणं नितान्तं महत्त्वपूर्णम् अस्ति इति वयं पूर्वस्मिन् पाठे दृष्टवन्तः। कस्यचित् शब्दस्य सम्यग्-उच्चारणार्थं, तस्य शब्दस्य प्रत्येक-वर्णस्य शुद्धं निर्दुष्टम् उच्चारणं भवेत्। अतः प्रत्येक-वर्णस्य शुद्धम् उच्चारणं कथं भवतीति अत्र ज्ञास्यामः।

वर्णानां स्वर-व्यञ्जनादीनां विविध-भेद-उपभेदानां विषये वयं पूर्वासु कक्षासु ज्ञातवन्तः। तत्र आस्ये षट् उच्चारण-स्थानानि अपि वयं दृष्टवन्तः। परन्तु, वर्णानाम् उच्चारणे केवलम् आस्यस्य एव उपयोगः भवति इति – न। वर्णानाम् उच्चारणार्थम् आस्येन सह शरीरस्य इतरेषाम् अपि अङ्गानाम् उपयोगः भवति, यथा —

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. | **नाभि-प्रदेशः** | (Navel-region | – Abdominal Muscles) |
| | | मांसपेशी-बल–तन्त्रम् | – (Muscular-pressure System) |
| २. | **उरः** | (Chest | – Lungs & Diaphragm) |
| | | वायु-बल–तन्त्रम् | – (Air-pressure System) |
| ३. | **कण्ठ-बिलः** | (Voice-box | – Larynx / Vocal-cords) |
| | | ध्वनि–तन्त्रम् | – (Phonatory & Resonatory System) |
| ४. | **आस्यम्** | (Head | – Mouth & Nose) |
| | | उच्चारण–तन्त्रम् | – (Articulatory System) |

- **आस्यस्य अभ्यन्तरे** — (क) **मुखम्** – (Mouth / Oral cavity),
  (ख) **नासिका** – (Nose / Nasal cavity) – च उभौ भवतः।

यदा वयं कञ्चित् शब्दं वर्णं वा उच्चारयितुम् इच्छामः, तदा —

१. सर्वप्रथमं **नाभि-प्रदेशे** स्थिताः मांसपेश्यः उरः नोदयन्ति।
२. **उरः** पुनः श्वासकोश-स्थितं वायुम् ऊर्ध्वं निःसारयति।
३. सः वायुः ऊर्ध्वं सरन् **कण्ठ-बिलं** प्राप्नोति।
४. ततः, सः वायुः पुनः ऊर्ध्वं सरन् **आस्यं** प्रविशति।

आस्यस्य अभ्यन्तरं प्रविश्य, **मुखे**, **नासिकायां** च स्थितेषु षट्सु उच्चारण-स्थानेषु वर्णानुसारं स्वकीयं स्थानं प्राप्य, सः वायुः तस्मिन् स्थाने वर्णरूपेण प्रकटीभवति।

© NCERT not to be republished

# मनुष्येषु वाग्-उत्पत्ति-प्रक्रिया

## (Voice Production Mechanism in Humans)

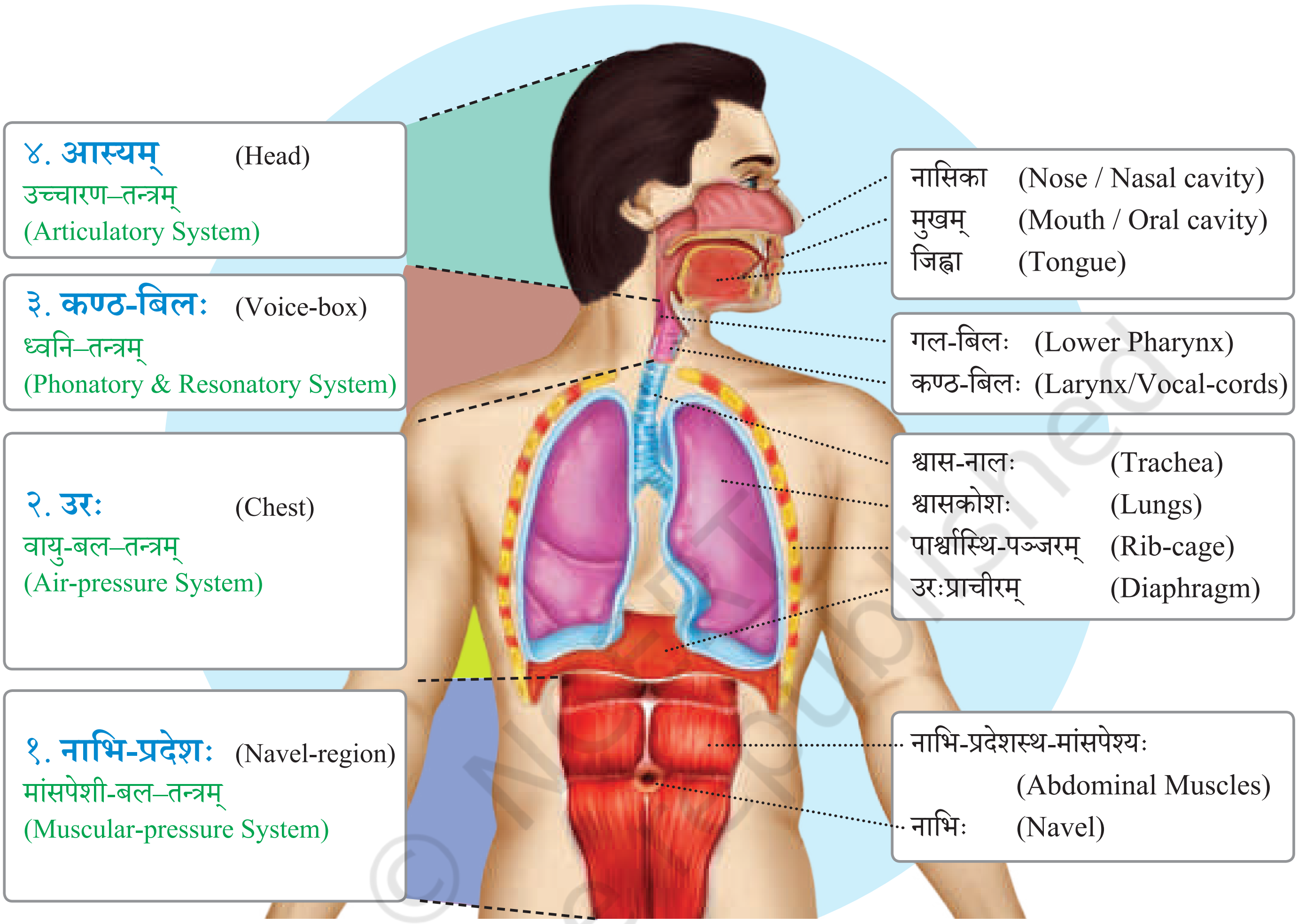


'आस्यस्य अभ्यन्तरे स्थितेषु षट्सु स्थानेषु स: वायु: वर्णरूपेण कथं प्रकटीभवति?' इति अग्रे ज्ञास्याम:।

**आस्यस्य** अभ्यन्तरे वर्णानाम् उत्पत्त्यर्थं वस्तुत: त्रीणि तत्त्वानि आवश्यकानि भवन्ति—

(क) प्रथमम् – **स्थानम्**

(ख) द्वितीयम् – **करणम्**

(ग) तृतीयम् – **आभ्यन्तर-प्रयत्न:**

अस्मिन् पाठे '**स्थानस्य**', '**करणस्य**' च चर्चां कुर्म:। '**आभ्यन्तर-प्रयत्नस्य**' विषये अग्रिमायां कक्षायां ज्ञास्याम:।

### (क) स्थानम्

वर्णस्य उच्चारण-समये, श्वासकोशतः ऊर्ध्वं सरन् वायुः, कण्ठ-बिल-माध्यमेन आस्यस्य अभ्यन्तरं प्रविश्य, तत्र मुखे नासिकायां वा यस्मिन् स्थले वर्णरूपेण प्रकटीभवति, तत्— '**स्थानम्**' इति उच्यते।

**आस्ये – षट् स्थानानि** वयं दृष्टवन्तः, यथा—

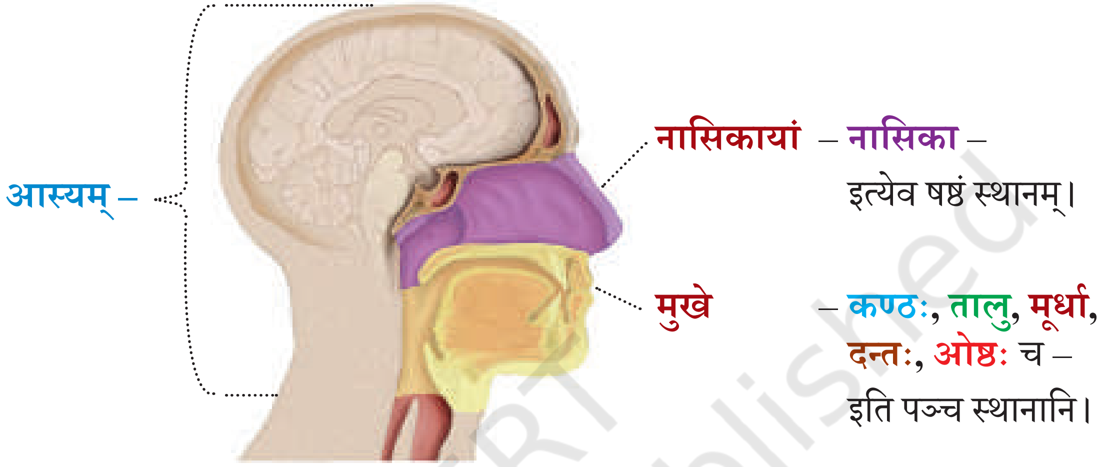


## आस्ये वर्णानां षट् उच्चारण-स्थानानि

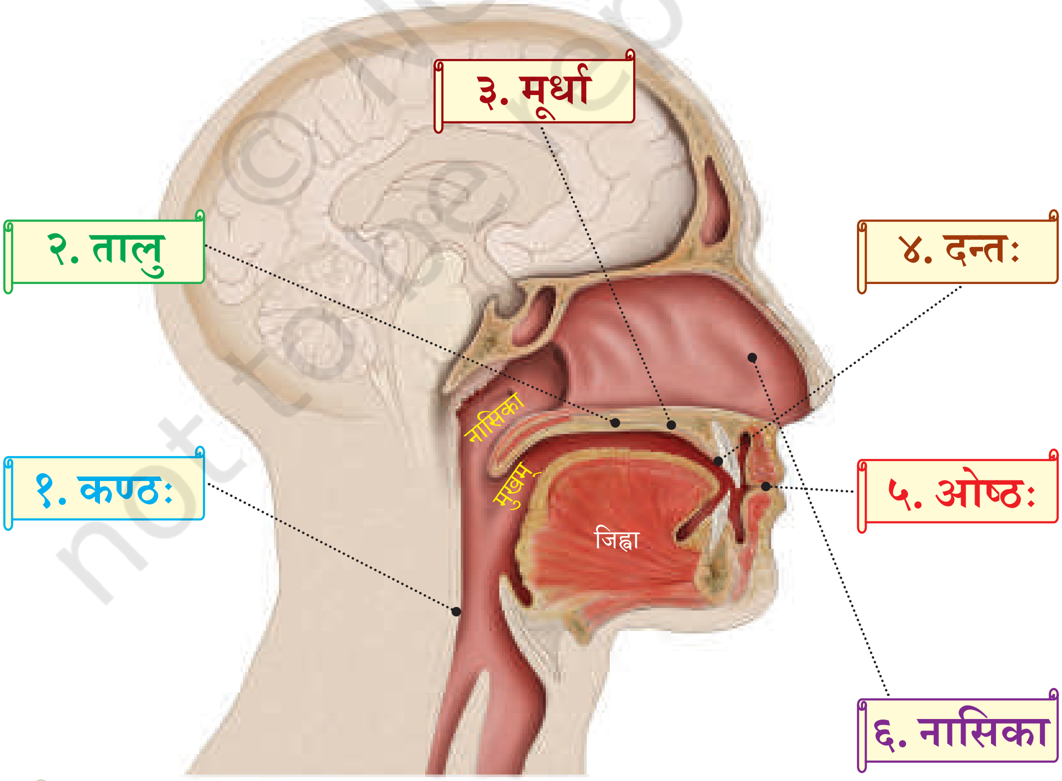


© NCERT not to be republished

**स्थानस्य** सम्यक् कार्य-निदर्शनार्थं **'मुरली'** समुचितम् उदाहरणम् अस्ति। मुरल्याः **'अङ्गुलिच्छिद्राणि'** आस्यस्य **'स्थानानि'** इव व्यवहरन्ति। मुरली-नलिकया आगच्छन् वायुः **अङ्गुलिच्छिद्रेषु** एव विविध-ध्वनि-रूपेण प्रकटीभवति।

© NCERT not to be republished

## (ख) करणम्

वर्णस्य उच्चारण-समये, आस्यस्य यः भागः **स्थानं** स्पृशति, **स्थानस्य** समीपं वा याति, सः भागः — '**करणम्**' इति कथ्यते।

यथा निदर्शने – मुरलीं वादयन्त्यः '**अङ्गुलयः**' – आस्यस्य **करणानि** इव व्यवहरन्ति। अङ्गुलयः यदा **अङ्गुलिच्छिद्राणि** विविधरूपेण स्पृशन्ति, तेषां समीपं वा यान्ति; तदा तेषु अङ्गुलिच्छिद्रेषु विविध-ध्वनयः प्रकटीभवन्ति।

> **तालु**, **मूर्धा**, **दन्तः** च – एतेषु त्रिषु स्थानेषु → '**जिह्वा**' **करणं** भवति।

**तालव्यानां**, **मूर्धन्यानां**, **दन्त्यानां** च वर्णानाम् उच्चारणार्थं → **जिह्वा** – यथाक्रमं **तालु**, **मूर्धानं**, **दन्तं** च **स्थानं** स्पृशति, समीपं वा याति, येन यथाक्रमं तत्-तद्-वर्णानाम् उत्पत्तिः भवति। अतः, एतेषां त्रिविधानां वर्णानाम् उच्चारणार्थं → **जिह्वा** – '**करणम्**', अर्थात् 'उपकरणं' भवति —

**तालव्याः वर्णाः**

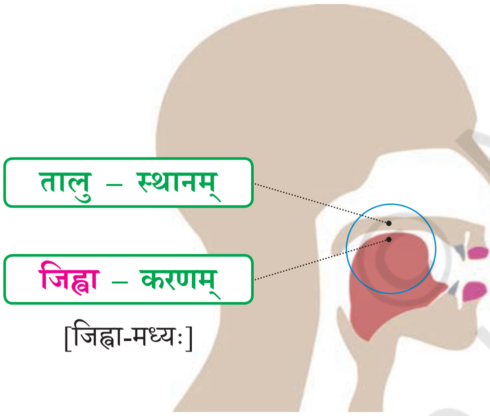


**मूर्धन्याः वर्णाः**

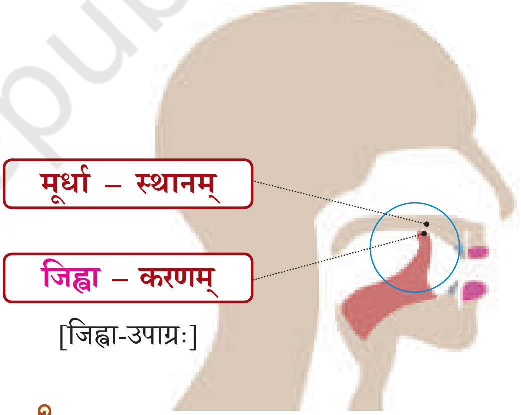


**दन्त्याः वर्णाः**

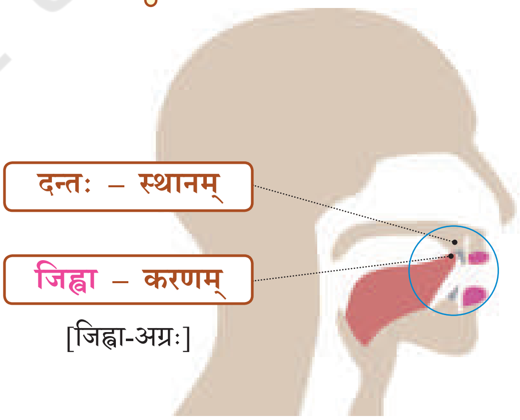


© NCERT not to be republished

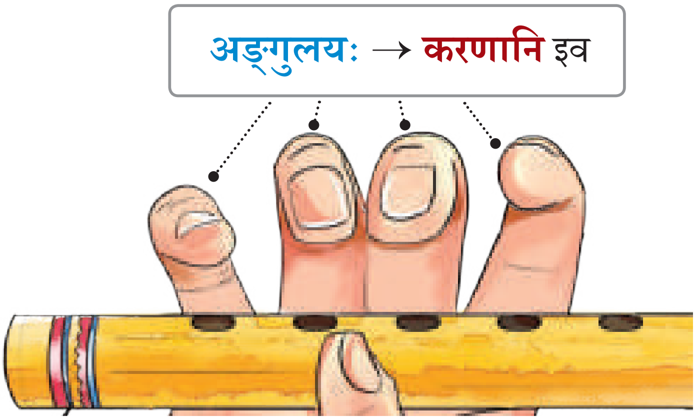


**कण्ठः**, **ओष्ठः**, **नासिका** च – एतेषु त्रिषु स्थानेषु → '**स्व-स्थानम्**' एव **करणं** भवति।

**कण्ठ्यानाम्**, **ओष्ठ्यानां**, **नासिक्यानां** च वर्णानाम् उच्चारणे **जिह्वा** प्रायः निष्क्रिया भवति। एतेषां वर्णानाम् उच्चारणार्थं → तत्-तत्-स्थानस्य एव कश्चित् पर-भागः तत्-तत्-स्थानस्य पूर्व-भागं स्पृशति, समीपं वा याति। अतः, एतेषां त्रिविधानां वर्णानाम् उच्चारणार्थं → **स्व-स्थानं – 'करणम्'**, अर्थात् 'उपकरणं' भवति—

**कण्ठ्याः वर्णाः**

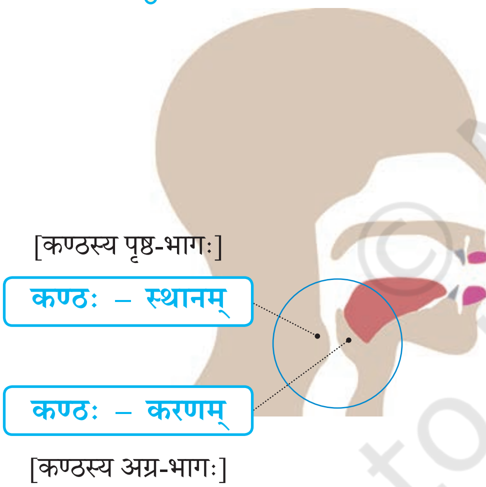


**ओष्ठ्याः वर्णाः**

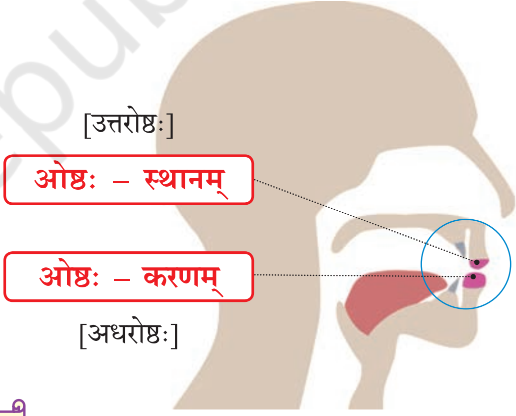


**नासिक्याः वर्णाः**

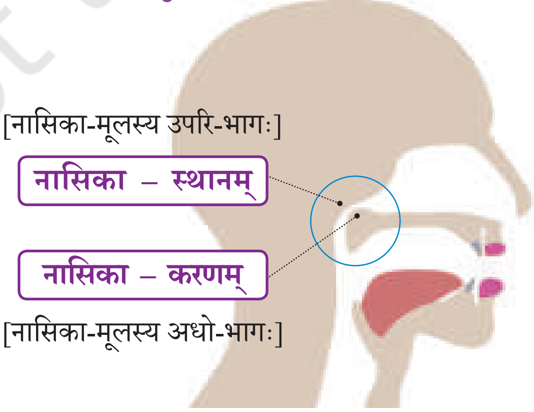


© NCERT not to be republished

## पारिभाषिक-शब्दार्थान् जानीमः

| शब्दः | अर्थः | हिन्दी | English |
|---|---|---|---|
| **शिक्षा** | **वर्णोच्चारण-शास्त्रम्** | **वर्णों के शुद्ध उच्चारण का विधान एवं विज्ञान** | **Phonetics (& Phonology)** |
| उच्चारणम् | कथनम् / वाङ्-निष्पत्तिः | कथन | Articulation (Speech) / Pronunciation |
| ध्वनिः | ध्वानः | ध्वनि | Sound / Phonation / Resonation |
| शब्दः | पदम् | शब्द | Word |
| वाक्यम् | वचः / परस्परान्वित-पद-समूहः | वाक्य | Sentence |
| वाक् | वाणी / गीः | वाणी | Speech / Spoken words |
| वर्णः | शब्दस्य अवयवभूतः लघुतमः ध्वनिः | वर्ण | Letter / Phoneme / Grapheme |
| आस्यम् | शिरः / मस्तकम् | मस्तक | Head |
| मुखम् | वक्त्रम् / वदनम् | मुँह | Mouth / Oral cavity |
| नासिका | नासा | नाक / नासिका-स्थान | Nose / Nasal cavity |
| कण्ठ-बिलम् | स्वरयन्त्रम् / ध्वनियन्त्रम् / कण्ठ-कूपः / कुहरम् | स्वरतन्त्री / घोषतन्त्री | Voice-box / Larynx [Vocal-cords] |
| गल-बिलम् | अधो-ग्रसनी | अधो-ग्रसनी | Lower Pharynx / Hypopharynx / Laryngopharynx |
| उरः | वक्षः | छाती | Chest |
| श्वासकोशः | फुप्फुसः | फेफड़े | Lungs |
| नाभि-प्रदेशः | तुन्दकूपी-क्षेत्रः | नाभि-भाग | Navel-region / Abdominal Muscles |
| मांसपेश्यः | स्नायवः | स्नायु | Muscles |
| बलम् | प्रणोदः / अभिपीडनम् | दबाव | Pressure |
| तन्त्रम् | प्रणाली | प्रणाली | (Anatomy) System / System (of Human Body) |
| **वर्णमाला** | **वर्णानां क्रम-पूर्वक-व्यवस्था** | **वर्णों की क्रम-पूर्वक व्यवस्था** | **Alphabet / Sequence of Letters** |
| **स्वरः** | **अच् / अच्-वर्णः** | **स्वर** (*स्वतन्त्र-वर्ण*) | **Vowel [V]** |
| अक्षरम् | स्वरः, एक-स्वर-केन्द्रित-वर्ण-समूहः वा | स्वर या एक-स्वर-केन्द्रित-वर्ण-समूह | Syllable / A Single Vowel or group of letters comprising a single Vowel |
| समानाक्षरम् | सिम् | सामान्य-स्वर | Simple-Vowel / Monophthong [V] |
| सन्ध्यक्षरम् | सन्धि-स्वरः | सन्धि-स्वर | Compound-Vowel / Diphthong [V] |
| **व्यञ्जनम्** | **हल्, हल्-वर्णः** | **व्यञ्जन** | **Consonant [C]** |
| स्पर्शः | वर्गीय-वर्णः | स्पर्श-वर्ण | Stop / Plosive [C], (*Touch*) |
| वर्गीयः | स्पर्श-वर्णः | वर्गीय-वर्ण | Class-Consonants / Groped [C] |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| अन्तःस्थः | वर्णमालायां स्पर्शानाम् ऊष्मणां च मध्ये स्थितः व्यञ्जन-वर्णः | वर्णमाला में स्पर्श एवं ऊष्मा वर्णों के मध्य स्थित व्यञ्जन-वर्ण | Glide (*Situated In-between*) |
| अर्ध-स्वरः | स्वरस्य किञ्चिद्-गुण-सदृशः व्यञ्जन-वर्णः | (*स्वर के समान कुछ गुण वाले व्यञ्जन-वर्ण*) | Semivowel / Semiconsonant [C] |
| ऊष्मा | संघर्षी / वायुप्रधानम् | (*वाष्प / भाप निःसृत करने वाले संघर्षी वर्ण*) | Fricative [C], (*Steam*) Sibilant (hissing sound) (श,ष,स) Aspirate (breathy sound) (ह) |
| अयोगवाहः | संयोगवाहः / प्रत्याहार-सूत्रेभ्यः बहिर्भूतः विशिष्टः व्यञ्जन-वर्णः | (*माहेश्वर-सूत्रों में अपठित विशिष्ट व्यञ्जन-वर्ण*) | After-sound [C] (*Special Consonant that is not enumerated in Śhiva-sūtras*) |
| अनुस्वारः | स्वरानुगः | बिन्दु / स्वर के बाद उच्चारित शुद्ध नासिक्य व्यञ्जन वर्ण [ ं ] | Nasalised Resonant sound uttered after a Vowel [C] (*Following the vowel*) |
| विसर्गः | विसर्जनीयः | विसर्ग [ : ] | Released “h” like sound (ḥ) [C] (*To send out / To release*) |
| अनुनासिकः | स्वस्थानेन सह नासिकया अपि उच्चारितः वर्णः | चन्द्र-बिन्दु [ ँ ] | Nasalised Letter |
| सानुनासिकः | अनुनासिक-गुण-सहितः | अनुनासिक गुण के सहित | Letter with Nasalisation |
| निरनुनासिकः | अनुनासिक-गुण-रहितः | अनुनासिक गुण के रहित | Letter without Nasalisation |
| संयुक्त-व्यञ्जनानि | संयोगः | स्वर-रहित व्यञ्जनों का समूह | Conjunct Consonants [C] |
| **स्थानम्** | **आस्ये उच्चारणस्य स्थलम्** | **मस्तक में उच्चारण का ‘स्थल’** | **‘Place’ of Articulation (in the head)** |
| कण्ठः | गलः (जिह्वामूलः) | गला / कण्ठ-स्थान | Throat / Glottis / Soft Palate / Velum. (*Uvula, Upper-Pharynx / Oropharynx*) |
| कण्ठ्यः | कण्ठ-स्थानोत्पन्नः वर्णः | कण्ठ-स्थान में उत्पन्न वर्ण | Guttural / Velar (Letter) (*Uvular, Pharyngeal*) |
| तालु | तालुकम् / काकुदम् | तालु-स्थान | Hard Palate |
| तालव्यः | तालु-स्थानोत्पन्नः वर्णः | तालु-स्थान में उत्पन्न वर्ण | Palatal (Letter) |
| मूर्धा | मूर्द्ध्वा / मूर्द्धा | मूर्धा-स्थान | Alveolar Ridge |
| मूर्धन्यः | मूर्ध-स्थानोत्पन्नः वर्णः | मूर्धा-स्थान में उत्पन्न वर्ण | Retroflex / Alveolar / Cerebral |
| दन्तः | रदनः / दशनः | दाँत / दन्त-स्थान | (Base of) Tooth |
| दन्त्यः | दन्त-स्थानोत्पन्नः वर्णः | दन्त-स्थान में उत्पन्न वर्ण | Dental (Letter) |
| ओष्ठः | दन्तवासः / दशनवासः | होंठ / ओष्ठ-स्थान | Lip |
| ओष्ठ्यः | ओष्ठ-स्थानोत्पन्नः वर्णः | ओष्ठ-स्थान में उत्पन्न वर्ण | Labial / Bilabial (Letter) |
| नासिक्यः | नासा-स्थानोत्पन्नः वर्णः | नासिका-स्थान में उत्पन्न वर्ण | Nasal (Letter) |

© NCERT not to be republished

| | | | |
|---|---|---|---|
| कण्ठ-तालव्यः | कण्ठ-तालु-स्थानयोः उत्पन्नः वर्णः | कण्ठ एवं तालु स्थानों में उत्पन्न वर्ण | Velar-palatal / Palato-velar Gutturo-palatal / Palato-guttural |
| कण्ठोष्ठ्यः | कण्ठ-ओष्ठ-स्थानयोः उत्पन्नः वर्णः | कण्ठ एवं ओष्ठ स्थानों में उत्पन्न वर्ण | Velar-labial / Labio-velar Gutturo-labial / Labio-guttural |
| दन्त्योष्ठ्यः | दन्त-ओष्ठ-स्थानयोः उत्पन्नः वर्णः | दन्त एवं ओष्ठ स्थानों में उत्पन्न वर्ण | Dento-labial / Labio-dental |
| **करणम्** | **आस्ये उच्चारणस्य उपकरणम्** | **मस्तक में उच्चारण का 'उपकरण' या 'यन्त्र'** | **'Tool' of Articulation (in the Head)** |
| उपकरणम् | यन्त्रम् | साधन | Tool |
| जिह्वा | रसना | जीभ | Tongue |
| जिह्वा-मध्यः | जिह्वायाः मध्यभागः | जीभ का मध्य भाग | Middle of Tongue |
| जिह्वा-उपाग्रः | जिह्वाग्रात् किञ्चित् पूर्वभागः | जीभ का अग्र भाग से थोड़ा पहले का भाग | Near Tip of Tongue |
| जिह्वा-अग्रः | जिह्वायाः अग्रभागः | जीभ का अग्र भाग | Tip of Tongue |
| स्वस्थानकरणः | निजस्थानस्य पर-भागः एव करणं यस्य वर्णस्य | जिस वर्ण का उच्चारण-स्थान का पर-भाग ही उसका करण हो | Such letters where a part of the 'Place' of Articulation itself acts as the 'Tool' of Articulation |

## वयं शब्दार्थान् जानीमः

| शब्दः | अर्थः | हिन्दी | English | मातृभाषया अर्थं लिखत |
|---|---|---|---|---|
| नितान्तम् | अत्यन्तम् | अतीव | Very / Highly | |
| निर्दुष्टम् | दोष-रहितम्/शुद्धम् | दोष-रहित / शुद्ध | Impeccable | |
| नोदयन्ति | अभिपीडयन्ति | दबातें हें | Press | |
| निःसारयति | बहिः प्रेषयति | बाहर निकालता है | Pushes out | |
| सरन् | चरन् | बढ़ना हुआ | Move | |
| प्रकटीभवति | उत्पद्यते | उत्पन्न होता है | Appears / Is produced | |
| निदर्शने | उदाहरणे | उदाहरण में | Example | |
| मुरली | वंशी | बाँसुरी | Flute | |
| परिभाषा | शास्त्रीय-व्याख्यानम् | शास्त्रीय व्याख्या | Technical definition | |

© NCERT not to be republished

## अभ्यासात् जायते सिद्धिः

**१. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन द्विपदेन वा उत्तरत —**

(क) उरसि किं तन्त्रं भवति? ..............................

(ख) नाभिप्रदेशे स्थिताः मांसपेश्यः किं नोदयन्ति? ..............................

(ग) आस्यस्य आभ्यन्तरे वार्णानाम् उत्पत्त्यर्थं द्वितीयं तत्त्वं किम् अस्ति? ..............................

(घ) आस्ये कति स्थानानि सन्ति? ..............................

(ङ) स्थानस्य कार्यनिदर्शनार्थं किं समुचितम् उदाहरणम् अस्ति? ..............................

(च) करणानि मुरल्याः कस्य भागम् इव व्यवहरन्ति? ..............................

**२. अधोलिखितप्रश्नानाम् उत्तराणि पूर्णवाक्येन लिखत —**

(क) करणं किं भवति?

(ख) उरः श्वासकोशस्थितं वायुं कुत्र निःसारयति?

(ग) मुरल्याः अङ्गुलिच्छिद्राणि कीदृशं व्यवहरन्ति?

(घ) केषां वार्णानाम् उच्चारणे जिह्वा प्रायः निष्क्रिया भवति?

(ङ) तालव्यानां, मूर्धन्यानां, दन्त्यानां च वार्णानाम् उच्चारणार्थं सामान्यं करणं किम् अस्ति?

(च) कण्ठ्यानां, ओष्ठ्यानां, नासिक्यानां च वार्णानाम् उच्चारणार्थं स्थानस्य करणस्य च मध्ये किं भवति?

**३. अधोलिखितेषु वाक्येषु आम् / न इति लिखित्वा उचितभावं सूचयत —**

(क) श्वासकोशस्थितः वायुः ऊर्ध्वं चरन् पूर्वम् आस्यं प्राप्नोति। ....................

(ख) सर्वप्रथमं नाभि-प्रदेशे स्थिताः मांसपेश्याः कण्ठं नोदयन्ति। ....................

(ग) आस्यस्य आभ्यन्तरे वार्णानाम् उत्पत्त्यर्थम् आभ्यन्तर-प्रयत्नः आवश्यकम् अस्ति। ....................

(घ) तालव्य-वर्णनाम् उच्चारणार्थं दन्तः स्थानं स्पृशति। ....................

(ङ) मूर्धन्यानां वार्णानाम् उच्चारणार्थं जिह्वा स्थानं स्पृशति। ....................

(च) तत्तत्स्थानस्य एव कश्चित् पूर्वभागः, तत्तत्स्थानस्य परभागं स्पृशति। ....................

not to be republished © NCERT

४. मुखे उपलभ्यमानानि स्थानानि बहिष्ठात् अन्तः यथाक्रमं (अर्थात् विपरीत-क्रमेण) लिखन्तु —

५. यथायोग्यं मेलनं कुरुत —

| सामान्य-स्थानम् | विशेष-स्थानम् | सामान्य-करणम् | विशेष-करणम् |
|---|---|---|---|
| ओष्ठः • | • मूर्धा • | • स्वस्थानं करणम् • | • अधरोष्ठः |
| दन्तः • | • नासिकामूलस्य उपरिभागः • | • जिह्वा करणम् • | • जिह्वाग्रः |
| नासिका • | • तालु • | • स्वस्थानं करणम् • | • जिह्वामध्यः |
| कण्ठः • | • उत्तरोष्ठः • | • जिह्वा करणम् • | • कण्ठस्य अग्रभागः |
| मूर्धा • | • दन्तः • | • स्वस्थानं करणम् • | • नासिकामूलस्य अधोभागः |
| तालु • | • कण्ठस्य पृष्ठभागः • | • जिह्वा करणम् • | • जिह्वोपाग्रः |

© NCERT not to be republished

### अत्र इदम् अवधेयम्

**परिभाषा—**

- '**स्वरः**' इत्यस्य परिभाषा-वाक्यम्—

  **स्वयं राजन्ते इति स्वराः।**

  अर्थः – ये वर्णाः (*स्वयं*) स्वतन्त्ररूपेण (*राजन्ते*) उच्चार्यन्ते,
  ते → **स्वराः** भवन्ति।

- '**व्यञ्जनम्**' इत्यस्य परिभाषा-वाक्यम्—

  **अन्वग् भवति व्यञ्जनम्।**

  अर्थः – उच्चारणार्थं यः वर्णः अचं (*स्वरं*) प्रति पराश्रितः भवति,
  सः वर्णः → '**व्यञ्जनं**' भवति।

## योग्यताविस्तरः

**पाणिनीय-शिक्षा-सूत्राणि—**

षष्ठ-कक्षायां 'स्थान-प्रकरणस्य' सूत्राणि दृष्टवन्तः। अधुना '**करण-प्रकरणस्य**' सूत्राणि—

| सूत्राणि | अर्थाः |
|---|---|
| | **करण–प्रकरणम्** |
| करणम् अपि। | अधुना (*वर्णोच्चारणस्य*) '**करणं**' जानीमः। |
| तालव्य-मूर्धन्य-दन्त्यानां – जिह्वा करणम्। | तालव्यानां मूर्धन्यानां दन्त्यानां च वर्णानाम् उच्चारणे → 'जिह्वा' करणं भवति। |
| जिह्वामध्येन – तालव्यानाम्। | तालव्य-वर्णानाम् उच्चारणे → जिह्वायाः 'मध्य-भागः' करणं भवति। |
| जिह्वोपाग्रेण – मूर्धन्यानाम्। | मूर्धन्य-वर्णानाम् उच्चारणे → जिह्वायाः 'उपाग्र-भागः' करणं भवति। |
| जिह्वाग्रेण – दन्त्यानाम्। | दन्त्य-वर्णानाम् उच्चारणे → जिह्वायाः 'अग्र-भागः' करणं भवति। |
| शेषाः – स्वस्थानकरणाः। | शेषाणां (कण्ठ्य-ओष्ठ्य-नासिक्यानां) वर्णानाम् उच्चारणे → 'स्वस्थानं' (*स्वस्य स्थानस्य कश्चिद् भागविशेषः*) एव → करणं भवति। |
| इत्येतत् करणम्। | अत्र पर्यन्तम् एतत् उच्चारणस्य '**करणं**' चर्चितम्। |

© NCERT not to be republished

# आस्यस्य

अभ्यन्तरे

## षट् स्थानानि, षट् करणानि च

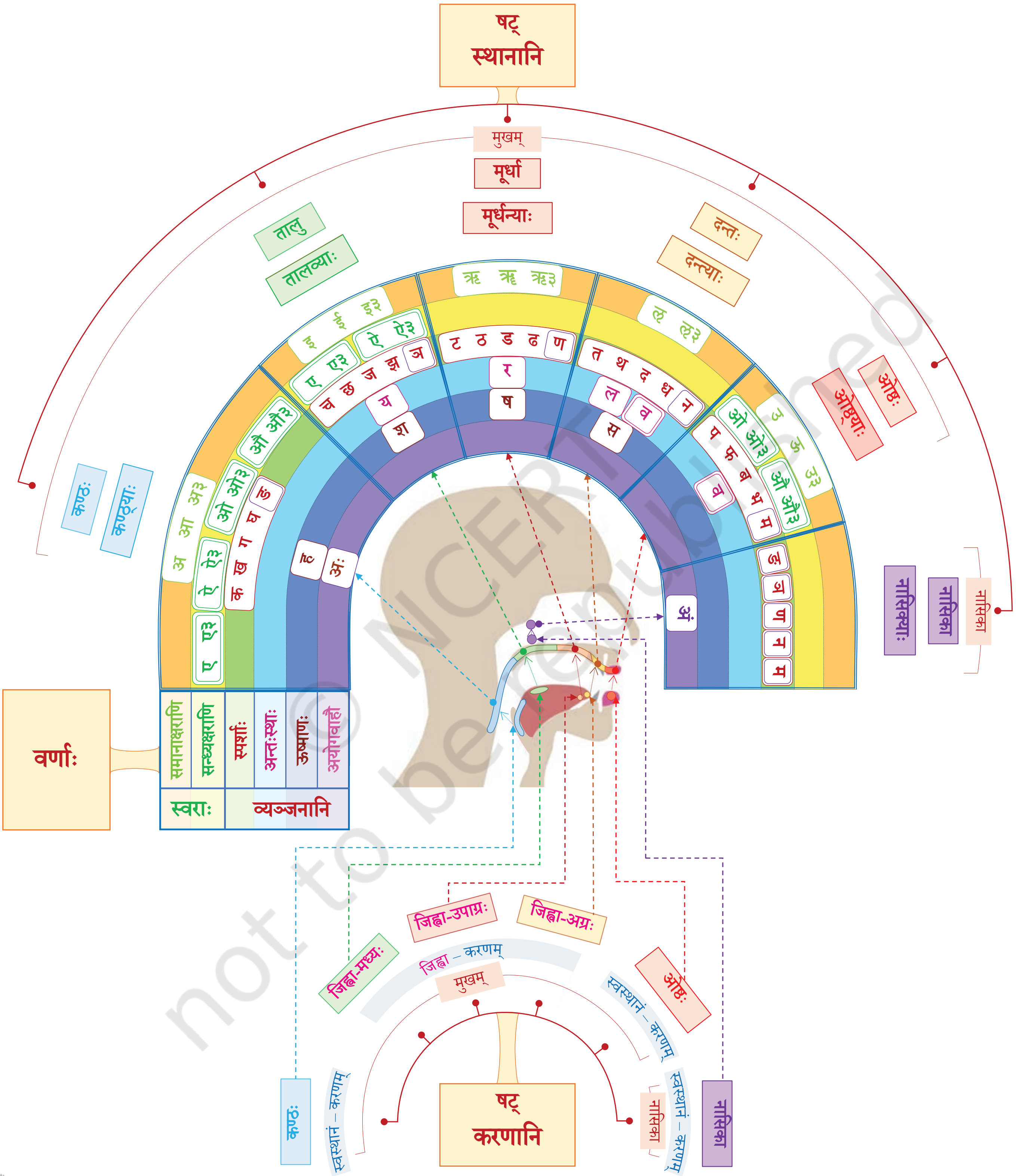


© NCERT not to be republished